8

8 से 11 वर्ष तक के बच्चों के लिए बाल साहित्य का सृजन कैसे हो?

मिश्री लाल मांडोत*

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण और उसके समुचित विकास तथा स्वस्थ एवं समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में उत्कृष्ट-कोटि के बाल साहित्य का बड़ा योगदान होता है। बाल साहित्य बच्चों की विकासोन्मुख प्रवृतियों को सही दिशा देने वाला हो। इसके साथ ही वह उनकी जिज्ञासा को तृप्त करने वाला, कल्पनाशक्ति में वृद्धि करने वाला, मनोविकास करने वाला, अहंभाव का स्वस्थ एवं संतुलित विकास करने वाला, सद्प्रवृतियों के निर्माण में सहायक, देश की सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने वाला, नवीन ज्ञान-विज्ञान की अद्यतन जानकारी देने वाला आदि होना चाहिए। यह बाल साहित्य बच्चों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने वाला, तर्क-सम्मत दृष्टिकोण का विकास करने वाला, उत्साह का संचार करने वाला, राष्ट्रीयता के बीज अंकुरित करने वाला, सृजन शक्ति में विकास करने की क्षमता रखने वाला हो। वर्तमान में देश की नयी पौध के लिए ऐसे ही श्रेष्ठ बाल साहित्य के सृजन करने की बड़ी आवश्यकता है।

बाल साहित्य का अभिप्राय है— बच्चों का हित करने वाला साहित्य। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण और उनके विकास के लिए समुचित दिशाएँ प्रदान करना बाल साहित्य की प्रमुख उपादेयता है।

बाल साहित्य की उपादेयता— स्वस्थ एवं समृद्ध बाल साहित्य के द्वारा स्वस्थ और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में बहुत अधिक योग मिलता है। उत्तम बाल साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होता है। हमें यह भली प्रकार समझने की आवश्यकता है कि बच्चों के विकास के लिए दूध, भोजन, पानी आदि की भाँति बाल साहित्य भी अनिवार्य है। राष्ट्र का प्रत्येक प्रबुद्ध चिंतन उत्कृष्ट बाल साहित्य के सृजन का आंकाक्षी है क्योंकि बच्चों के समुचित व्यक्तित्व का निर्माण करना हम सभी का मुख्य ध्येय है। बच्चे ही हमारे देश के भाग्य विधाता हैं। उनके व्यक्तित्व के गठन में बाल साहित्य की अहम भूमिका है। बाल साहित्य उनके जीवन में उचित वातावरण का सृजन कर सकता है। यही कारण है कि अभिभावकों एवं शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को उत्तम बाल साहित्य उपलब्ध कराएँ। बच्चों की आयु के अनुरूप

* *निदेशक,* श्री जैन आदर्श सेवा संस्थान, रामदेवरा रोड़, नोखा, बीकानेर 334803

© NCERT not to be republished

उनकी रुचि एवं उनके मानसिक विकास और भाषा संबंधी ज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए बाल साहित्य का सृजन किया जाना चाहिए। बच्चों की जिज्ञासा अत्यंत बलवती और कल्पनाशक्ति इतनी प्रखर होती है कि उनकी भावना जीवन के हर पहलू को छूती है तथा निरंतर कुछ जानना और पाना चाहती है। उनकी रुचियाँ, उनकी प्रवृत्तियाँ और अभिवृतियाँ भी उनकी जिज्ञासा की भाँति विस्तृत होती है, यद्यपि उनका मानसिक विकास प्रौढ़ों की भाँति परिपक्व नहीं होता। बाल साहित्य का निर्माण करते समय हमें उसके सृजन की सीमाओं को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही विद्यालयों में बाल साहित्य की उपलब्धता और उसके उपयोग में वृद्धि पर भी समुचित ध्यान देने की परम आवश्यकता है। पुस्तकों तक विद्यार्थियों को पहुंच हो।

वर्तमान में 8 से 11 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए श्रेष्ठ बाल साहित्य का अभाव है। बाल साहित्य सृजन करने की दिशा में लेखकों, प्रकाशनों, संपादकों, शिक्षकों तथा अन्य सभी संबद्ध व्यक्तियों को एक मंच पर आकर सुनिश्चित योजना के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है।

इस आयु वर्ग के लिए बाल साहित्य का सृजन कैसे करें?

8 से 11 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए बाल साहित्य की रचना करते समय अधोलिखित कुछ उद्देश्यों एवं आधार तत्वों पर ध्यान देना आवश्यक है।

बच्चों की विकासोन्मुख प्रवृतियों को एक सही दिशा प्रदान करना

भावात्मक एवं विचारात्मक दृष्टि से बच्चे एक तटस्थ और निरपेक्ष प्राणी होते हैं। इस अवस्था में उनमें भाव और विचार बनने का क्रम प्रारंभ हो जाता है और उनके विकास की गति भी बड़ी तीव्र हो जाती है। 8–9 वर्ष की आयु के बच्चों में जीवन और जगत के प्रति कोई निश्चित धारणा या दृष्टिकोण नहीं होता। उनमें किसी प्रकार का पूर्वाग्रह भी नहीं पाया जाता। बाल-साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से बच्चों के सुकुमार मन और बुद्धि को एक आधार और दिशा प्रदान करता है। इसी कारण बाल साहित्य का प्रथम उद्देश्य भी यह होना चाहिए कि बच्चों की विकासोन्मुखी प्रवृत्तियों को एक सही दिशा मिले तथा जीवन और जगत के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण बनाने में सहायक हो सके। उदाहरणार्थ— इसी आयु वर्ग के बच्चों में हम स्वस्थ सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं को पुष्पित और पल्लवित कर सकते हैं। उसे वर्ण, जाति, संप्रदाय आदि के योगदान से ऊपर उठाकर राष्ट्रीय और मानवीय आदर्शों की ओर उन्मुख कर सकते हैं।

बच्चों की जिज्ञासा को तृप्त करना

इस आयु वर्ग के बच्चों में जिज्ञासा बड़ी प्रबल होती है। वे अपने परिवेश को जानने के लिए सदैव उत्कंठित रहते हैं। इसलिए बाल साहित्य में ऐसी सामग्री का समावेश होना चाहिए जिसे पढ़कर उसकी भावनाएँ सबल हों और उनकी जिज्ञासा तृप्त हो सके। बच्चों में

© NCERT not to be republished

जब पठन-योग्यता आ जाती है तो उसके लिए साहित्य अपेक्षित है जो उसे अपनी परिस्थितियों तथा अपनी अंतर्चेतना के अनुकूल बढ़ाने में सहायता प्रदान करें। इस साहित्य में प्रबल प्रेषण शक्ति होनी चाहिए जो उसकी संवेदना शक्ति को छू सके और जगा सके। बच्चों की जिज्ञासा को तृप्त करने के लिए इसमें नई ज्ञानोपयोगी सामग्री इस प्रकार समाविष्ट करनी चाहिए जिसमें पर्याप्त मनोरमता हो। इससे बच्चों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। महापुरूषों की जीवनी, विज्ञान, ऐतिहासिक आख्यान आदि से इस प्रकार की सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो सकती है।

कल्पनाशक्ति बनाए रखना जो यथार्थता से परे न हो

इस आयु वर्ग के बच्चों में कल्पनाशक्ति बड़ी प्रबल होती है। साथ ही कल्पना और यथार्थ में विशेष अंतर नहीं कर पाते। इस कारण बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जो एक ओर उसे कल्पनाशील बनाए रखे तथा दूसरी ओर वह यर्थाथ से बहुत दूर न चला जाए। कल्पनाशीलता के लिए बच्चों का प्रकृति, जीव-जंतु, वन-उपवन, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, तारे आदि के साथ संबंध स्थापित करके उनकी अनुभूतियों को समृद्ध बनाना चाहिए। ललित कलाओं के क्षेत्र में अग्रसर करने के लिए उनकी स्वाभाविक कल्पनाशक्ति को विकसित करना चाहिए। बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जिसमें बच्चों को आनंद विभोर करने की शक्ति हो तथा कल्पना प्रवणता बढ़ाने में सक्षम हो। इस बात का विशेष ध्यान रहे कि बच्चों की कल्पना सृजनात्मकता की ओर प्रवृत होनी चाहिए। कल्पना का एक रूप निर्वाध कल्पना भी है। यह बच्चों के मानसिक और सर्वांगीण स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी है, यही कल्पना विज्ञान की जननी है। उड़न खटोले, जादू भरी नगरियाँ, आकाश की सैर आदि से बच्चों की कल्पना को नया बल मिलता है। बच्चे यह भी जानते हैं कि यह एक कल्पना है। एक सावधानी यह भी रखनी आवश्यक है कि भय, क्रोध उत्पन्न करने वाली घटनाएँ, प्रतिहिंसा, भूत-प्रेत की कहानियाँ आदि सामग्री बाल साहित्य में नहीं होनी चाहिए क्योंकि इससे बच्चों में संवेगात्मक असंतुलन उत्पन्न होता है।

बाल साहित्य मनोविकास करने वाला हो

बच्चे प्रेम, क्रोध, राग-द्वेष, भय, ईष्या आदि भावनात्मक द्वंदों का तीव्र अनुभव करते हैं। अबोध और अशक्त होने के कारण वह इन द्वंद्वों का उचित निराकरण नहीं कर पाते। इसलिए बच्चों की मनोविकास संबंधी प्रवृतियों के आधार पर बाल साहित्य का सृजन होना चाहिए। क्रोध ओर घृणा के बजाए प्रेम का, भय के बजाए साहस और उत्साह का, ईष्या और द्वेष की बजाए स्पर्द्धा और स्वस्थ प्रतियोगिताओं का भाव होना चाहिए। बाल साहित्य में सृजनात्मकता प्रवृतियों पर बल देना चाहिए।

अहंभाव का स्वस्थ एवं संतुलित विकास का प्रयास होना चाहिए

इस आयु वर्ग के बच्चों में अहं का भाव बहुत अपरिपक्व होता है। इसी कारण उनके अहंभाव का स्वस्थ एवं संतुलित विकास का प्रयास किया जाना

© NCERT not to be republished

चहिए। यदि बच्चों का अहंभाव किसी कारण अतृप्त, संकीर्ण, दमित अथवा अविकसित रह जाता है तो बच्चों का मानसिक विकास उचित रूप से नहीं हो सकेगा और उसमें मानसिक ग्रंथियाँ बन जाएँगी। अहंभाव के स्वस्थ विकास के लिए बाल साहित्य में ऐसे चरित्रों का समावेश होना चाहिए जिन्हें बच्चे अपना आदर्श मान सकें। इसी अहं के निर्माण से उचित आत्म-सम्मान की भावना का निर्माण होता है। बाल साहित्य में ऐसी सामग्री समाविष्ट होनी चाहिए जिससे बच्चों के परम अहं के निर्माण में सहायता मिले। यह परम अहं का भाव उसे नैतिक और सामाजिक मान्यताओं की ओर अग्रसर करने में सहायक होता है। एक विशेष बात देखने में आयी है कि इस आयु वर्ग के बच्चों में वीर पूजा की भावना जागृत होती है, अत: बाल साहित्य में वीरों की ऐसी कहानियों को सम्मिलित किया जाए जिन्हें बच्चा अपना आदर्श मानें। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों में जातीयता अथवा प्रादेशिक संकीर्णता की भावनाएँ विकसित न हों और वे सदैव राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों की ओर उन्मुख होते रहें।

सद्प्रवृतियों एवं उचित मान्यताओं का निर्माण करने में सहायक

इस आयु वर्ग के बच्चों में सद्प्रवृतियों एवं उचित मान्यताओं का निर्माण अधिक संभव है। बच्चे अपने परिवेश में सत् और असत् दोनों प्रकार की प्रवृतियों को देखता है। अतः बाल साहित्य में कहानियों, जीवनियों, उदाहरणों के माध्यम से सद्वृतियों एवं उचित मान्यताओं का निर्माण किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से पंचतंत्र की कथाएँ, हितोपदेश आदि हमारे मार्गदर्शक हो सकते हैं। बाल साहित्य में द्वेष, कलह, क्षोभ आदि का वर्णन उपयुक्त नहीं है क्योंकि इनसे अनेक प्रकार की विरोधी धारणाएँ बन जाती हैं।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अवगत कराना

बाल साहित्य का एक प्रमुख ध्येय बच्चों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराना है। प्रत्येक देश की अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, उसकी अपनी विशिष्टताएँ और विलक्षणताएँ होती हैं। अत: प्रत्येक बच्चे को इससे अवगत कराना आवश्यक है, जिससे वह स्वयं को भारतीय कहने में गौरव का अनुभव कर सके। उसे भारत की धरती, यहाँ के लोगों, परिवेश, संस्कृति, परंपराएँ, रीति-रिवाज आदि से प्रेम होगा तभी वह स्वदेश के हितों की रक्षार्थ त्याग और बलिदान करने के लिए उद्यत रहेगा। साथ ही अपने देश और उसकी संस्कृति के विकास में सुख का अनुभव करेगा। यह खेदजनक है कि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में वर्तमान पीढ़ी हमारे देश की संस्कृति की अमूल्य निधियों से अपरिचित है। बाल साहित्य के माध्यम से इस कमी की पूर्ति करना अपेक्षित है।

व्यापक आधार प्रदान करने वाला हो

बाल साहित्य बच्चों की भावना और उसकी विचार शक्ति को उद्बुद्ध करता है तथा उसे एक बौद्धिक आधार प्रदान करता है। इसलिए बाल साहित्य जितना अधिक व्यापक आधार दे सके, जितनी अधिक सुरुचियों और अभिरुचियों का निर्माण कर सके, विचार के जितने अधिक क्षेत्र खोल सके, उतना ही वह अधिक उपयोगी होगा। वह अन्वेषण और अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगा।

© NCERT not to be republished

नवीनतम ज्ञान-विज्ञान को सुलभ कराना

आमतौर पर साहित्य में उस युग का सत्य अभिव्यंजित होता ही है। अस्तु बाल साहित्य में भी यह अवश्य अभिव्यंजित होना चाहिए। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। परमाणु शक्ति, कंप्यूटर टेक्नोलॉजी, मोबाइल, अंतरिक्ष यान आदि से आज के बच्चे अनभिज्ञ नहीं है। अत: बाल साहित्य में इस नवीनतम ज्ञान-विज्ञान को बच्चों के लिए सुलभ कराना चाहिए।

बच्चों के धरातल पर उतरने की आवश्यकता

बाल साहित्यकार को बच्चों के धरातल पर उतरना होता है। साहित्यकार की ज्ञान-गरिमा बच्चों के लिए तब तक उपयोगी नहीं होगी, जब तक कि वह बच्चों के धरातल पर उतरकर अपनी अनुभूतियों को बच्चों की वाणी का परिधान नहीं पहना देता। रवींद्रनाथ टैगोर को इसका आदर्श माना जा सकता है, जिन्होंने अत्यंत सरल भाषा में बाल साहित्य की संरचना की। बाल साहित्यकार में बच्चों की भाँति सरल हृदय, निश्छल प्रेम, निर्दोष चिंतन तथा सरल अनुभूति की आवश्यकता है तभी वह सरल और चित्रमय भाषा में बाल साहित्य का सृजन कर सकता है। बच्चों को भावना की भाषा चाहिए। जिस साहित्यकार में यह क्षमता विद्यमान है वही उपयुक्त बाल साहित्य की रचना करने में सफल हो सकता है।

अनुकरण की प्रवृति का स्वस्थ उपयोग करना

इस उम्र के बच्चे प्रौढ़ों के अनुकरण में विशेष रुचि लेते हैं; यथा— नकली मूछें लगाना, कुछ झुककर चलना, खाँसना, अकड़कर बोलना आदि। इस कारण अनुकरण की इस प्रवृति का स्वस्थ उपयोग बाल साहित्य में किया जाना चाहिए।

साहसपूर्ण कार्यों के लिए उत्साहित करना

इस उम्र में बच्चों में सामान्यतः भय का संचार शीघ्रता से होता है। यथा— रात्रि के अंधेरे से डरना, कुत्ते-बिल्लियों, कीड़े-मकोड़ों से डरना आदि। भय के कारण न केवल बच्चों की कोमल भावनाओं का दमन होता है अपितु उनके मन के उत्साह का प्रवेग भी सूख जाता है। किसी भी नए कार्य को करने में अज्ञात भय का अनुभव करने लगता है। बच्चों को ज्ञात-अज्ञात भय दोनों प्रकार के भय और आतंक से मुक्ति देकर नए साहसपूर्ण कार्यों के लिए उत्साहित करना, बाल साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए।

क्रोध का परिष्कार एवं प्रेम की भावना का यथोचित विकास

इस उम्र के बच्चों में थक जाने, भूख लगने, अपना हक नहीं मिलने, तिरस्कार करने, चिढ़ाने की स्थिति में क्रोध का संवेग दृष्टिगोचर होता है। वे हर बात पर चिढ़ने लगते हैं। ऐसे बच्चों के क्रोध का उपयोग अध्ययन कार्यों के लिए किया जा सकता है। उन्हें ऐसे साहित्य पढ़ने को देने चाहिए, जिसमें दुष्ट पात्रों के प्रति बच्चों के मन में क्रोध की सहज अभिव्यक्त हो तथा सद्पात्रों के आदर्शों को आत्मसात करने की प्रेरणा मिले। बच्चों में स्नेह का विस्तार भी होता है। वे परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य बच्चों से भी लगाव महसूस करने लगते हैं। साथ ही अपने से बड़ों से मिलने वाले लाड़-दुलार के भी आकांक्षी होते हैं। बाल साहित्य के द्वारा बच्चों में प्रेम भावना का यथोचित विकास किया जा सकता है। इसी उम्र

© NCERT not to be republished

के बच्चों में राष्ट्र प्रेम, मानव मात्र के प्रति प्रेम की भावना को पुष्ट किया जा सकता है।

तर्क सम्मत दृष्टिकोण का विकास

बाल साहित्य का सृजन इस प्रकार किया जाए कि जिसके पढ़ने से बच्चों में तर्क-सम्मत दृष्टिकोण का विकास संभव हो सके। कहानी, नाटक, में उपस्थित होने वाली किसी भी घटना समस्या के समाधान में वे तर्कपूर्ण दृष्टिकोण अपना सकें।

बाल साहित्य के प्रकार

इस उम्र के बच्चों के लिए दो प्रकार के बाल साहित्य के सृजन की आवश्कता है।

1. **भावनात्मक साहित्य**— कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि।
2. **उपयोगी बाल साहित्य**— गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, ज्ञान-विज्ञान आदि की अनेक शाखाओं का परिचय देने वाली रचनाएँ।

इस उम्र के बच्चों के लिए रचनाओं का सृजन करते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि उस बाल साहित्य में गति हो, घटनाएँ हों और रहस्य, रोमांच भी हो। उनके लिए लिखी गई रचनाएँ उनके वातावरण से संबंधित विषयों पर सरल तथा घटना-प्रधान होनी चाहिए, जो उनकी क्षेष्ठ भावनाओं को उभार कर उनके चारित्रिक गठन पर उपयुक्त प्रभाव डाल सके।

बाल साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए जिस बाल साहित्य का सृजन किया जाए, उसमें अग्रलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए—

- बाल साहित्य को पढ़ने वाले बच्चों में आत्मविश्वास का संचार हो तथा क्रमश: यह भावना पुष्टतर होती रहे ताकि वे कई प्रकार की कठिनाइयों के समाधान में समर्थ हो सकें।
- उसके अध्ययन से बच्चों में तर्क-सम्मत दृष्टिकोण का विकास हो सके।
- बाल साहित्य केवल उपदेशात्मक न हो बल्कि बच्चों को भावी जीवन के लिए तैयार करने में सहायक सिद्ध हो।
- बाल साहित्य बच्चों की वर्तमान आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखकर सृजित किया जाना चाहिए क्योंकि वर्तमान को बिगाड़कर सुखद भविष्य की कल्पना नहीं की जा सकती।
- इस आयु वर्ग के बच्चों में राष्ट्रीयता, भावनात्मक एकता, श्रम के प्रतिनिष्ठा आदि भावनाओं के अनुकूल साहित्य का सृजन किया जाना अपेक्षित है।
- जीवन में उत्साह का संचार करना तथा भय और आतंक से मुक्ति इस उम्र के साहित्य का मुख्य ध्येय होना चाहिए।
- बाल साहित्य की भाषा और शैली सरल, सरस, प्रवाहमयी और उनके मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।
- वह उसकी सृजनशक्ति के विकास में सहायक हो।
- उससे बच्चों की अभिरुचियों के विकास और परिष्कार में पर्याप्त सहायता मिले।
- उससे स्वस्थ मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों को आनंद की अनुभूति भी हो।

© NCERT not to be republished

- वह मानसिक और सामाजिक समायोजन क्षमता के विकास में विशेष सहायक हो।

निष्कर्ष

हम सब की प्रबल अभिलाषा है कि स्वाधीन भारत की कोमल पौध को उनके विकास के लिए भोजन, हवा और पानी के रूप में ऐसा सद् साहित्य उपलब्ध कराएँ। जिससे वर्तमान में भी ये पौध हरी-भरी और प्रसन्न दिखायी दें तथा भविष्य में भी दूसरों के लिए फलदायी हों। सद्-बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में कल्पनात्मक और सृजनात्मक शक्ति को उभारने, कल्पनाओं और भावनाओं का समन्वय करने, उनमें राष्ट्र प्रेम, चरित्र-निर्माण और भावनात्मक एकता के बीज अंकुरित करने, अनुशासित जीवन मापन करने, धर्म, जाति, वर्ग आदि के घेरों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय और मानवीय प्रेम के प्रति आस्था रखने आदि जीवन मूल्यों का विकास संभव हो सकेगा। यह राष्ट्र के लिए एक अनमोल संपदा होगी। उपर्युक्त वर्णित बातों को दृष्टिगत रखते हुए बाल साहित्य का सृजन करने का प्रयास एक अनिवार्य आवश्यकता है।

© NCERT not to be republished